प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 7 नवम्बर, 2014 को छठे वर्ल्ड आयुर्वेद कांग्रेस के शुभारंभ समारोह के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

आज नई दिल्ली के प्रगति मैदान में छठे विश्व आयुर्वेद कांग्रेस में आप सबके बीच आकर मुझे बहुत खुशी और गर्व की अनुभूति हो रही है। आयुर्वेद चिकित्सा की प्राचीनतम पद्धतियों में से एक है। इसका उद्गम भारत में हुआ था और यह पद्धति वैदिक काल से प्रचलित है। आयुर्वेद के इतिहास और उद्गम के बारे में कहा जाता है कि यह ब्रह्मदेव द्वारा चिकित्सक धन्वन्तरि को दिया गया दिव्य ज्ञान है। इसका उल्लेख चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में मिलता है। महाभारत और रामायण जैसे हमारे प्राचीन महाकाव्यों में भी आयुर्वेद का उल्लेख है।

2. छठे विश्व आयुर्वेद कांग्रेस की विषय-वस्तु "आयुर्वेद और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां " भी अत्यंत सामयिक एवं उपयुक्त है। आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है परंतु इसके बावजूद कुछ कठिन और लाइलाज बीमारियों का उपचार महंगा है और ऐसे रोगियों के जीवन भर देखभाल और चिकित्सीय सहायता की जरूरत पड़ती है। ऐसे रोगियों की जीवनशैली में परिवर्तन लाकर समग्र रूप से इनके उपचार की आवश्यकता है। इस परिदृश्य में सामान्य रूप से भारतीय चिकित्सा पद्धति और विशेष रूप से आयुर्वेद स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक बेहतर विकल्प है जिसका उपयोग लोग लंबे अरसे से करते आ रहे हैं।

3. आयुर्वेद के उद्गम के बारे में बताना चाहूंगी कि यह चार उपवेदों अथवा वैदिक शिक्षा के दूसरी श्रेणी के ग्रंथों में से एक है। अन्य उपवेद हैं - गंधर्व वेद (संगीत), स्थापत्य वेद, (दिशा विज्ञान) और धनुर्वेद (युद्ध कला)। आयुर्वेद इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तन-मन को स्वस्थ बनाने के सभी पहलुओं से जुड़ा हुआ है। संस्कृत में उपचार को चिकित्सा कहा जाता है। चरक, सुश्रुत और वाग्भट की आयुर्वेद की पुस्तकों में चिकित्सा या उपचार से संबंधित खंड शामिल हैं। इसी तरह इनमें निदान स्थान-बीमारी का पता लगाना से संबंधित खंड और शरीर स्थान - सशरीर आत्मा जिसमें भौतिक शरीर की संरचना और शरीर विज्ञान शामिल है, जैसे अनुपूरक खंड भी हैं। आयुर्वेद में शरीर की प्रकृति (तन, मन और आत्मा), इसकी कार्य पद्धति, रोगों के कारण और उपचार की स्पष्ट व्याख्या है तथा इसका उद्देश्य आम जनता का कल्याण मात्र है।

4. तस्याऽऽयुषः पुण्योतमो वेदो वेदविदां मतः।

वक्ष्यते यन्मनुष्याणां लोकयोरूभयोर्हितम्।।

(आयुर्वेद सबसे श्रेष्ठ पुण्यजनक है क्योंकि अन्य ज्ञान पारलौकिक हित को ही बतलाते हैं। आयुर्वेद इहलोक और परलोक दोनों के हितों को कहता है, ऐसा ज्ञानियों का मत है।)

आयुर्वेद आहार, जड़ी-बूटियों, दवाइयों, शल्य-चिकित्सा, शारीरिक रचना सहित चिकित्सा की सभी पहलुओं से संबंधित है और इसमें पंचकर्म जैसी विशेष नैदानिक प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं। इसमें स्वास्थ्यकारी साधनों के रूप में आसन और प्राणायाम से लेकर मंत्रोच्चार और ध्यान की योग प्रक्रियाएं भी शामिल हैं। वास्तव में आयुर्वेद केवल एक चिकित्सा पद्धति नहीं बल्कि जीवन शैली है।

5. योग और आयुर्वेद समूचे मानव जीवन और पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त ज्ञान की दो परस्पर संबंधित शाखाएं हैं। आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की एक लोकप्रिय और शक्तिशाली पद्धति है। योग एक आध्यात्मिक पद्धति है जिसे संस्कृत में साधना कहा जाता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी संयुक्त राष्ट्र की आम सभा में दिए गए भाषण के दौरान अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की बात कही थी। इससे जीवनशैली में चमत्कारिक परिवर्तन हो सकता है। एक अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हो सकता है कि हम सब स्वच्छता को अपनाएं। हमारे प्रधानमंत्री ने नागरिकों में स्वच्छता के महत्व की भावना जगाने के लिए हाल ही में स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि व्यक्तिगत साफ-सफाई और स्वच्छता से स्वस्थ वातावरण और स्वस्थ समाज का निर्माण करने में बहुत मदद मिलेगी।

6. यह एक सच्चाई है कि कठिन और असाध्य रोगों के कारण मृत्यु दर बहुत अधिक बढ़ जाती है। आज भारत जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों जैसे मोटापा, मधूमेह, ब्लड प्रेशर इत्यादि से जूझ रहा है जिनका इलाज आसान नहीं होता। इन बीमारियों में पूरे एहतियात रखने की एवं जीवनशैली को बदलने की आवश्यकता पड़ती है। इनमें लैब में बार-बार जांच कराने की भी जरूरत पड़ती है। अतः, इन रोगों को नियंत्रित करने एवं सरल एवं तनावमुक्त जीवन जीने के लिए जीवनशैली में बदलाव लाना ही सबसे बढ़िया तरीका है। यदि हम प्रातः उठकर थोड़ा व्यायाम कर लें, थोड़ा टहल लें, तो सुबह की ताजी हवा जीवनदायिनी सिद्ध होती है। जीवनशैली और व्यवहार में बदलाव निश्चित रूप से कई बीमारियों में राम बाण की तरह काम करती हैं। यही कारण है कि आयुर्वेद पद्धति में हमेशा पथ्य और अपथ्य का विचार किया जाता है।

7. आज हम आधुनिक युग में जी रहे हैं जहां कुछ ऐसी बीमारियों ने दस्तक देना शुरू कर दिया है जिनका नाम हमने पहले कभी नहीं सुना था। जैसे डेंगु, चिकनगुनिया, एंथ्रेक्स, स्वाईन फ्लू, बर्ड फ्लू, इबोला वायरस। परंतु हैरतअंगेज बात यह है कि इनमें से ज्यादा बीमारियों का इलाज हमारी परंपरागत चिकित्सा पद्धति में है, आयुर्वेद में है। जैसे डेंगु का इलाज गिलोय के रस से होता है। हो सकता है, पहले भी ये बीमारियां अस्तित्व में रही हों, पर अब वे दोबारा प्रकट हो रही हों। परंतु, जब बीमारियों से पीड़ित रोगियों की संख्या अधिक हे, तो बड़ी संख्या में लोगों को प्राथमिक और

अनिवार्य देखभाल करना सरकार की जिम्मेदारी है। तब आयुर्वेद जैसी परंपरागत चिकित्सा प्रणाली को मुख्य धारा में लाना बहुत जरूरी हो जाता है।

8. आयुष पद्धति में लोग इलाज तभी कराना चाहेंगे, जब यह पद्धति रोग निवारण में प्रभावी साबित हो तथा व्यय भी कम हो। यह बहुत हद तक गुणवत्तापूर्ण और जड़ी-बूटी आधारित कच्चे माल की निरंतर उपलब्धता पर निर्भर करती है। व्यापार में इस्तेमाल होने वाली 90 प्रतिशत से अधिक जड़ी-बूटियां जंगलों से आती हैं। विश्व-स्तर पर जड़ी-बूटी आधारित उत्पादों की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। इसके कारण इनके संग्रह का दबाव बढ़ता जा रहा है। जंगलों से औषधीय गुणों वाले पौधों का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल हो रहा है। जिसके कारण आयुष उत्पादों के लिए सामग्री की कमी हो रही है। इसलिए औषधीय गुणों वाले पौधों को गांवों और शहरों में उगाने से ही इस उद्योग की कच्चे माल संबंधी जरूरत पूरी होगी। यह भी ध्यान देने योग्य बात है।

9. चिकित्सा पर्यटन उद्योग वर्ष 2017 तक 4 बिलियन अमरीकी डालर तक की होने की आशा है। वैकल्पिक उपचार के उद्देश्य से आए पर्यटकों के लिए भारत एक अच्छा विकल्प बनता जा रहा है। विभिन्न देशों से रोगी आयुर्वेद, योग, एक्यूपंक्चर, जड़ी-बूटी युक्त तेल मालिश, प्राकृतिक उपचार के माध्यम से किफायती और स्वास्थ्यकर वैकल्पिक उपचार के लिए भारत में आ रहे हैं। यह उत्साहवर्द्धक है।

10. सरकार ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के अभिन्न भाग के रूप में परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों का अधिकतम उपयोग किए जाने का निर्णय लिया है तथा इसके लिए उन्होंने वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराई है। यह निश्चय ही प्रशंसनीय है तथा इसके लिए वह बधाई की पात्र है। पहले राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और हाल ही में स्वीकृत राष्ट्रीय आयुष मिशन का उद्देश्य आयुष सेवाओं को जन-जन तक पहुंचाना है। साथ ही देश में प्रचलित विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों की सेवाओं को एक ही जगह पर उपलब्ध कराना है ताकि लोगों को अपनी पसंद का चिकित्सा पद्धति में इलाज कराने का मौका मिल सके।

11. हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में आयुर्वेद पद्धति के इलाज में बहुत विविधता मिलती है। इन्हें देसी दवाओं के नाम से जाना जाता है। स्थानीय स्तर पर इलाज की वे पद्धतियां अपने-आप में अनूठी होती हैं। परंतु वे रोगियों को रोगमुक्त कर देती हैं। कश्मीर से केरल तथा सौराष्ट्र से बंगाल तक किए जाने वाले उपचार में जो विविधता मिलती है, उसका संरक्षण केवल आयुष जैसा संगठन ही कर सकता है। आयुष विभाग को विभिन्न क्षेत्रों के देसी चिकित्सकों का पता लगाने, उनके अनुभवों, केस स्टडीज, रोगियों के आंकड़ों को लिपिबद्ध करने का महत्वपूर्ण काम करना चाहिए। इससे संबंधित जानकारी सभी के सूचनार्थ एवं सुलभ संदर्भ हेतु उपलब्ध भी कराया जाना चाहिए

ताकि उन नुस्खों का फायदा आम जनता को मिले। आयुर्वेद के आश्चर्यजनक नुस्खे हमारे देश में उपलब्ध हैं जिनका इस्तेमाल भी हो रहा है, परंतु उनका संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है।

13. आयुर्वेद हमेशा से स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। आयुर्वेद के क्षेत्र में हमारे देश में 46 संस्थान शिक्षा, शोध, प्रशिक्षण और उपचार की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। आयुर्वेद में रोगों के निवारण और स्वास्थ्य सुविधा को बेहतर बनाने की व्यापक संभावना को ध्यान में रखते हुए मेरा यह मानना है कि देशवासियों के लिए और अधिक आयुर्वेद चिकित्सा संस्थान खोले जाने की आवश्यकता है।

14. आयुर्वेद की लोकप्रियता के साथ ही झोलाछाप वैद्यों/डॉक्टरों का खतरा भी बढ़ा है। उनसे निपटने के लिए कारगर अधिकारियों को नियुक्त किए जाने की आवश्यकता है ताकि कोई आम जनता के जीवन से खिलवाड़ न कर सके। इन नकली वैद्यों के विज्ञापनों से प्रिंट मीडिया और इंटरनेट भरा पड़ा है जो साधारण और गंभीर बीमारियों के उपचार और थेरेपी उपलब्ध कराने का दावा करते हैं। समय की मांग है कि आयुष विभाग ऐसे झोलाछाप वैद्यों/डॉक्टरों को चिह्नित करने हेतु संबंधित तंत्र को मजबूत बनाए। इस पुरातन प्रणाली की शुचिता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है। वैद्य/डॉक्टर का योग्य होना अत्यंत आवश्यक है। शास्त्र में वर्णित है-

कुर्यान्निपतितो मूर्ध्नि सशेषं वासवाशनः।

सशेषमातुं कुर्यान्न त्वज्ञमतमौषधम्।।

(**इन्द्र के हाथ से छूटा हुआ वज्र यदि मनुष्य के सिर पर गिर पड़े तो उससे बचना सम्भव हो सकता है, परन्तु मूर्ख वैद्य से दी हुई औषधि रोगी को समाप्त ही कर डालती है।**)

15. मैं आयुष विभाग, दिल्ली सरकार, विश्व आयुर्वेद फाउंडेशन को नई दिल्ली में इस तीन दिवसीय सम्मेलन के आयोजन के लिए धन्यवाद देती हूँ। मैं आशा करती हूं कि इस सम्मेलन में होने वाली चर्चाएं आयुर्वेद के तकनीकी और नीतिगत मुद्दों पर केन्द्रित होंगी तथा सरकारों के विचारार्थ एक सिफारिशी मसौदा तैयार किया जाएगा। अंत में मैं यह कहना चाहती हूं कि:

धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्यं मूल मूत्तमम्।

रोगाः तस्यापहन्तारः श्रेयसो जीवितस्य च।।

(**धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष इस चतुर्विधि पुरूषार्थ की प्राप्ति हेतु आरोग्यता ही उत्तम मूल है एवं रोग इनको नष्ट करने वाले होते हैं, अतः मनुष्य का सदा स्वस्थ रहना ही उसके लिए श्रेयस्कर है।**)